पश्चिमी यूरोप का एकीकरण तथा अमेरिकी रणनीति : साम्यवादी पूर्वी यूरोप

⇒ यूरोप को पश्चिमी सभ्यता का हृदय कहा जाता है क्योंकि यहूदीवाद- यूनानी- रोमन - ईसाई परम्पराओं का अभ्युदय यहीं पर हुआ था, जिसका प्रसार यूरोप की सीमाओं से बहुत आगे नई दुनिया, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड तक हुआ।

⇒ चार्ल्स डिगाल के अनुसार → "अटलांटिक से यूराल तक यूरोप की सीमाओं का विस्तार पाया जाता है।"

* यूरोप का क्षेत्रफल → 40 लाख वर्ग मील

राजनीतिक दृष्टि से महाद्वीप में 47 राष्ट्र राज्य हैं।

भौगोलिक क्षेत्र :

- पूर्वी यूरोप ÷ रूसी गणराज्य, पोलैंड, बायलोरशिया, लिथुआनिया, लैटविया
- दक्षिण-पूर्वी यूरोप ÷ रूमानिया, हंगरी, यूगोस्लाविया, अल्बानिया, बुल्गारिया, ग्रीस, तुर्की
- स्केण्डेनियन देश ÷ नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैंड
- पश्चिमी यूरोप ÷ फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैंड, लैक्जमबर्ग तथा मोनाको
- ब्रिटिश टापू ÷ इंग्लैंड, उत्तरी आयरलैंड, आयरिश गणराज्य

Note :- आइसलैंड, माल्टा, साइप्रस को भी यूरोप में रखा जाता है।

⇒ वैचारिक दृष्टि से यूरोप एक विशिष्ट संस्कृति और सभ्यता है, जीवन का एक विशिष्ट प्रकार है।

⇒ भाषा, नस्ल और राजनीतिक विविधताओं के बावजूद भी यूरोप को एक ही मानते हैं।

⇒ पश्चिमी यूरोप के देश सुरक्षा की खोज में यूरोप के एकीकरण के प्रयास करते रहें।

⇒ द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में शांति स्थापना करना एक जटिल कार्य था।

विजेता राष्ट्रों के पारस्परिक मतभेद तथा अविश्वास और संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत रूस के स्वार्थों ने इस समस्या को और जटिल बना दिया।

⇒ 15 July 1955 को आस्ट्रिया द्वारा शांति संधि पर हस्ताक्षर किया गया, इस संधि द्वारा आस्ट्रिया को एक सम्प्रभु और स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दिया गया।

⇒ आत्मसमर्पण करने के बाद जर्मनी और मित्र राष्ट्रों के बीच शांति संधि सम्पन्न नहीं हुई।

⇒ जर्मनी के पुनर्निर्माण के प्रश्न पर संयुक्त राज्य अमेरिका ब्रिटेन, फ्रांस तथा रूस के बीच गम्भीर मतभेद था।

⇒ जर्मनी के पश्चिमी क्षेत्र पर ~~अ~~ ~~अ~~ ये देश नियंत्रित स्थापित कर लिया और इसे संघीय गणराज्य के रूप में जाना गया, जिसकी राजधानी-बोन (Bonn) थी।

⇒ दूसरी तरफ रूस ने 7 oct 1949 को जर्मन जनतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी- बर्लिन थी। इसे पूर्वी जर्मन के नाम से जाना गया।

⇒ May 1952 में पश्चिमी जर्मनी को व्यावहारिक स्वाशासन प्रदान कर दिया। और जर्मन संघीय गणराज्य के मौलिक कानून को पश्चिमी क्षेत्रों के मित्र राष्ट्रीय सैनिक गवर्नरों ने स्वीकार कर लिया।

⇒ सोवियत संघ ने 20 sep 1955 को एक संधि द्वारा पूर्वी जर्मनी के जनतांत्रिक गणराज्य को पूर्ण स्वाधीनता और प्रभुता प्रदान कर दी।

⇒ Nov 1972 में दोनों जर्मन राज्यों में एक संधि सम्पन्न हुई और दोनों एक-दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए जर्मन समस्या के समाधान के लिए बल प्रयोग के उपायों का परित्याग कर दिया। दोनों U.N.O का सदस्य बन गया।

⇒ 3 oct 1990 को जर्मन एकीकरण का कार्य सम्पन्न हुआ। और 'संघीय गणराज्य' नाम रखा गया तथा राजधानी बर्लिन को बनाया गया।

पश्चिमी यूरोप का राजनीतिक एकीकरण एवं अमेरिकी नीति :

⇒ दोनों महायुद्धों में यूरोपीय देशों द्वारा उठाई गई भारी शक्ति हानि के कारण जो शक्ति-शून्य उत्पन्न हो गया था उसी के कारण यूरोपीय देश यह सोचने के लिए बाध्य हो गए कि अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के मुख्य केन्द्र में अमेरिका तथा रूस द्वारा अपने-अपने राजनीति प्रभाव क्षेत्रों में विस्तार करने के लिए किये गए प्रयत्नों के प्रत्युत्तर में यूरोप का राजनीतिक एकीकरण ही प्रभावशाली उपाय है।

⇒ यूरोपीय एकता प्राप्त करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति बनाई गई।

⇒ 1948 में इस समिति की बैठक हेग में हुई। इसके बाद यूरोप की परिषद का निर्माण हुआ।

यूरोप की परिषद (Council of Europe)

→ 1949 ई. में स्थापना

→ ब्रुसेल्स में नींव पड़ी

March 1949 में 10 राज्यों के प्रतिनिधियों की यूरोप की परिषद के विधान की रूपरेखा तैयार करने के लिए बैठक हुआ

* 5 May 1949 को 10 देशों ने संविधान पर हस्ताक्षर किया इसके बाद 1949 में ही तुर्की तथा यूनान, 1950 में आइसलैंड, 1951 में पश्चिमी जर्मनी, 1956 में आस्ट्रिया 1961 में साइप्रस इसके सदस्य बने।

वर्तमान में कुल सदस्य → 21 है।

मुख्यालय → स्ट्रेसबर्ग

परिषद का उद्देश्य :-

→ अनु-1 में परिषद के उद्देश्य की व्याख्या है

* अपने सदस्यों के बीच एकता पैदा करना ताकि उन सिद्धान्तों की रक्षा और लागू किया जा सके जो उनकी साझी विरासत है जिनसे आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति हो सकती है।

Note:- राष्ट्रीय प्रतिरक्षा से संबंधित मामले यूरोप की परिषद के क्षेत्र में नहीं आता

परिषद का अंग
- → सलाहकार संसदीय सभा
- → मंत्रियों की समिति
- → सचिवालय

कार्य :— सलाहकार संसदीय सभा :- परिषद का विचार-विमर्शीय अंग है। इसमें प्रत्येक सदस्य के प्रतिनिधि होते है, जो सरकार के इच्छानुसार चुने जाते है।

=) ये सदस्य अपने-अपने विचार प्रकट करते है।

=) इनकी सहायता के लिए कई समितियाँ है।

=) वर्ष में एक बार बैठक होती है। जो एक माह तक चलती है

=) इसमें केवल आर्थिक तथा सामाजिक मामलों पर विचार किया जाता है।

मंत्रियों की समिति :
- → इसमें सदस्य देशों के विदेश मंत्री सदस्य होते हैं।
- → एक वर्ष में तीन बार बैठक होती है।
- → परिषद का कार्यकारिणी अंग है।
- → सलाहकार सभा के निर्णयों को लागू करना इसकी जिम्मेदारी है।

सचिवालय →
- → दोनों अंगो की सहायता करना।
- → मुखिया ही मुख्य सचिव है।

→ यह परिषद अपने मुख्य उद्देश्य में असफल रही लेकिन दुसरे आन्दोलन का मुख्य प्रेरणा रही। जो इसकी मुख्य उपलब्धि है।

पश्चिमी यूरोप की सुरक्षा या सैनिक एकीकरण :

⇒ अमेरिका और रूस के बीच शीत युद्ध काफी लम्बे समय तक चला जिसके चलते यूरोपीयन देशों को लगा कि सोवियत आक्रमण के समय अमेरिका अविश्वासनीय हो सकता है अतः यूरोपीय देशों को स्वयं आत्मनिर्भर होना चाहिए।

⇒ शीत युद्ध के आंतक ने पश्चिमी यूरोप के देशों को ~~एक~~ एकीकृत सुरक्षात्मक प्रयत्नों की आवश्यकता महसूस करायी थी, जिससे सैनिक संधियों का जाल सा बिछ गया था।

डेनकर्क संधि :- 4 March 1947

- → अवधि → 50 वर्ष के लिए
- → ब्रिटेन + फ्रांस के बीच

मुद्दा → जर्मन आक्रमण के विरुद्ध ~~सैनिक~~ एक-दूसरे को सैनिक सहायता प्रदान करना।
→ आर्थिक सहयोग करना।

ब्रुसेल्स की संधि :

→ पश्चिमी यूरोप में सामुहिक सुरक्षा की व्यवस्था सुदृढ़ करने के लिए संधि।

देश → ब्रिटेन बेल्जियम, फ्रांस, लेक्जमबर्ग, और हॉलैंड ने संधि पत्र पर हस्ताक्षर किया।

मुद्दा → आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सहयोग और सामूहिक सुरक्षा।

उद्देश्य → नागरिकों के मूलभूत अधिकारों में विश्वास की पुष्टि, संयुक्त राष्ट्र के आदर्शों का पालन जनतंत्र एवं स्वतंत्र को स्थाई बनाने की दिशा में प्रयत्न, आपसी आर्थिक, सामाजिक सहयोगों की स्थापना यूरोपियन आर्थिक पुनर्गठन में सहयोग देना।

Note :- 4थी धारा में उल्लेख → यदि इस संधि पर हस्ताक्षर किए देशों पर कोई आक्रमण करता है तो U.N.O. की धारा 51 के अनुसार अपनी सम्पूर्ण सैनिक आक्रमण हुए देश को प्रदान कर देगा।

⇒ ब्रुसेल्स संधि का सर्वोच्च अंग एक परामर्शदात्री परिषद् है, जो 5 सदस्यों राज्यों के विदेश मंत्रियों से मिलकर बनी है।

⇒ 1954 के पेरिस के समझौते से पश्चिमी जर्मनी और इटली भी इसमें सम्मिलित हो गया और उस संगठन को नया नाम पश्चिमी यूरोपियन संघ रखा गया।

यूरोपियन प्रतिरक्षा समुदाय : EDC → The European Defence Community.

⇒ सोवियत के बढ़ते प्रभाव से अमेरिकी नेताओं को, जर्मनी को पुनः सशस्त्र करने की आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया क्योंकि एक अलग जर्मन सेना को अनावश्यक माना गया। इसलिए उसके सैनिक टुकड़ियों को पश्चिमी यूरोप के साथ मिला लिया गया।

⇒ फ्रांस ने एक प्रस्ताव दिया कि नाटो की सेनाओं के साथ-साथ पश्चिमी यूरोपीय सेना बना दी जाय — इसी योजना को यूरोपीय प्रतिरक्षा समुदाय कहा गया। नाटो ने इस योजना को स्वीकृति दे दिया।

⇒ यह योजना असफल हो गया क्योंकि फ्रांस की संसद ने इसका समर्थन नहीं किया, अतः इसके स्थान पर पश्चिमी यूरोपीय संघ का निर्माण किया गया।

पश्चिमी यूरोपीय संघ → oct 1954

→ लन्दन सम्मेलन में नींव पड़ा।

→ पश्चिमी जर्मन पर मित्र राष्ट्रों का सैनिक अधिकार समाप्त कर दिया जाय तथा नाटो में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया जाय।

⇒ बदले में पश्चिमी जर्मन ने स्वीकार किया कि वह अपने शस्त्रास्त्र के उत्पादन पर स्वेच्छापूर्वक नियंत्रण करेगा।

⇒ इससे यूरोप के राजनीतिक दृष्टि से वस्तुतः एक होने की आशा की सम्भावना समाप्त हो गई। अब पश्चिमी यूरोपियन संघ का एक ही काम रह गया कि वह शस्त्रास्त्र नियंत्रण की देखभाल करे और वह भी प्रधान रूप से जर्मन की सैनिक प्रभुता को रोकने के लिए।